तस्मै सभ्याः सभार्याय गोप्त्रे गुप्ततमेन्द्रियाः ।

अर्हणामर्हते चक्रुर्मुनयो नयचक्षुषे ।।55।।

**अन्वय** सभ्याः गुप्ततमेन्द्रियाः मुनयः सभार्याय गोप्त्रे अर्हते नयचक्षुषे तस्मै अर्हणां चक्रुः।

**अनुवाद** (तब) सभ्य (व्यवहार-कुशल), जितेन्द्रिय मुनियों ने प्रजा के पालक, नीतिरूपी नेत्र वाले (नीतिज्ञ), तथा पूजा के योग्य राजा का, उसकी सुदक्षिणा के साथ, स्वागत किया।

**टिप्पणियाँ**

**विशेष** प्राचीन भारत में अतिथि-सत्कार को पुण्य समझा जाता था। गृहस्थ तथा तपस्वी के नित्य कर्मों में जिन पञ्चमहायज्ञों का विधान किया गया है, उनमें अतिथि-पूजन को भी यज्ञ का स्थान दिया गया है और उसे 'नृयज्ञ' कहा जाता है। उसकी महत्ता का परिचायक **अतिथिदेवो भव** भारतीय सभ्यता का मूल मन्त्र है अर्थात् अतिथि को ईश्वर मानो। अतः यह स्वाभाविक ही था कि वशिष्ठ के आश्रम के ऋषियों ने अपना पुण्य कर्त्तव्य समझ दिलीप और उसकी पत्नी सुदक्षिणा का सत्कार किया। प्राचीन भारतीय समाज में अतिथि-यज्ञ के महत्व पर विदेशी यात्रियों ह्यूनसाँग, मेगस्थानीज आदि ने अपनी मुग्धता का परिचय दिया। अतिथि-पूजन के तीन मुख्य अंग हैं.(1) पाद्य (हाथ और पैर धोने के लिए अतिथि को जल अर्पण करना), (2) अर्घ्य (आचमन के लिए जल अर्पण करना) और (3) मधुपर्क अल्पाहार के लिए फल-मधु आदि अर्पण करना)।

**गुप्ततमेन्द्रियाः** अतिशयेन गुप्तानि इति गुप्ततमानि (धातु गुप् क्त तमप्); गुप्ततमानि इन्द्रियाणि येषां ते (बहुव्रीहि)।

**गोप्त्रे** धातु गुप् तृच् गोप्तृ (रक्षक) शब्द का चतुर्थी विभक्ति में एकवचन। प्रजापालक राजा के लिए।

**प्रजानां विनधाधानात् रक्षणात् भरणादपि** (रघुवंशम्)

**सभ्यः** सभायां साधवः इति सभ्याः (सभा़यत्) अक्षरार्थ है - सभा में रहने वाले, सभा में कुशल। परन्तु यहाँ अर्थ 'नम्र' 'शिष्ट' है।

**अर्हते** 'अर्हत्' (धातु अर्ह् शतृ) का चतुर्थी विभक्ति एकवचन, योग्य राजा के लिए।

**नयचक्षुषे** नयः एव चक्षुः यस्य सः (बहुव्रीहि), तस्मै (उस राजा के लिए) जिसकी नीति ही आँख है। देखिए, **सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यंध एव सः।** भारवि ने गुप्तचरों को (क्योंकि गुप्तचर भी नीति का एक आयाम है) राजा के चक्षुओं के रूप में माना है - **क्रियासु युक्तैर्नृप चार-चक्षुषो न वञ्चनीयाः** (किरातार्जुनीयम्, 14)